



SHRI KALYAN SINGH RAWAT

Shri Kalyan Singh Rawat is an educationist as well as social activist. Presently he is the founder secretary of Maiti Organisation. In order to make the plantation meaningful and effective he laid the foundation of the "Maiti Movement" by giving emotional form. By linking the emotional relationship between mother and daughter with a tree, this movement set a milestone in the direction of environment, awareness and conservation. On the occasion of wedding bride and groom plants a sapling to make their marriage memorable. After marriage, bride's mother takes responsibility of nurturing and protection of planted sapling. These trees planted in the wedding by the daughters of the village become the factors of prosperity of the village. This tree plantation movement, involving emotional relationships gradually become popular and since 1995 more than 5 lakh plants have been planted in weddings.

2. Born on 19th October, 1953 at Bainoli village, District Chamoli, Uttarakhand, Shri Rawat did his graduation in 1975 from Hemwati Nandan Bahuguna Garhwal University, Srinagar and Post Graduation in Botany from Government PG College Gopeshwar, Chamoli in 1977. He did his B.Ed. in 1978, MA History in 1980 and MA Political Science in 1984. He was appointed as a teacher in secondary education in the year 1979. He also worked as a Scientist in Uttarakhand Space Application Centre from 2009 to 2012. He retired from his duties in 2014 from Education Department. Apart from academic and scientific work he also benefited society by performing various successful innovative experiments in the direction of environment protection and conservation. Under this movement many memorial forest have been established and this movement has now taken the form of ritual. Many states and countries have accepted this initiative.

3. Shri Rawat has done more than two dozen successful innovative experiments for conservation and promotion of forest, conservation of wild life, conservation of Himalaya, water resources and cultural heritage. He also initiated "Gram Ganga Abhiyan". By this, migrant people are connecting with their villages.

4. Shri Rawat started the Maiti movement in the year 1995 from Gwaldam town of Chamoli district. Maiti word is derived from Malt, which means "maternal home". Before leaving the maternal home, bride and groom plants a sapling to make their wedding memorable. The mother of the bride takes responsibility of nurturing and protection of the plant.

5. Shri Rawat also established "Himalaya Vanya Jeev Sansthan" at Gopeshwar, Chamoli in 1976 to conserve very rare wild life species of the Himalaya. Through various awareness programmes more than 5000 wild animal species were protected from poachers. In 1974 he also worked with Shri Chandi Prashad Bhatt, Padma Bhushan Awardee, who is known for Chipko Movement. He has also established quercus and mix species forest. In the memory of martyrs he established Shaurya Van, Gaura Devi Van and Pitra Van. He also started three big fairs related to environment conservation and awareness like Nandasain Paryatan Mela, Shravani Vikash Paryavaran Mela Narayan Bagar, Rajgarhi Paryatan Evam Paryawaran Mela. He has developed many small nurseries in schools at Rajgarhi Uttarkashi, Gwaldam Chamoli etc. In Gwaldam he planted 10,000 plants of deodar (Cedrus deodara) and developed Gaura Van, Indra Van and Dev Van etc.

6. Shri Rawat is the recipient of numerous award and honours. He has been conferred with Godfrey Bravery Award, CII Green Award, Uttarakhand Ratna, Garh Gaurav, Garh Vibhuti, Parvat Shree, Vriksha Mitra Award, Best Science Teacher Award by National Science Academy, Life time Achievement Award etc.





श्री कल्याण सिंह रावत

श्री कल्याण सिंह रावत एक शिक्षाविद् होने के साथ–साथ सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं। वर्तमान में, वह मैती संगठन के संस्थापक सचिव हैं। वृक्षारोपण को सार्थक और प्रभावी बनाने के लिए उन्होंने ''मैती आंदोलन'' को भावनात्मक रूप देखते हुए उसकी आधारशिला रखी। मां और बेटी के बीच के भावनात्मक संबंधों को एक पेड़ के साथ जोड़कर, इस आंदोलन ने पर्यावरण, जागरूकता और संरक्षण की दिशा में एक कीर्तिमान स्थापित किया। विवाह के मौके पर दूल्हा और दुल्हन विवाह समारोह को यादगार बनाने के लिए पौधे लगाते हैं। विवाह के बाद, दुल्हन की माँ लगाए गए पौध के पोषण और संरक्षण की जिम्मेदारी लेती है। गाँव की बेटियों द्वारा विवाह होने के समय लगाए गए ये पेड़ गाँव की समृद्धि का हिस्सा बन जाते हैं। भावनात्मक संबंधों वाला यह वृक्षारोपण आंदोलन, धीरे–धीरे लोकप्रिय हो गया और वर्ष 1995 से लेकर अब तक विवाहों के दौरान 5 लाख से अधिक पौधे लगाए गए हैं।

2. दिनांक 19 अक्टूबर, 1953 को उत्तराखंड के चमोली जिला के बनौली गाँव में जन्मे श्री रावत ने वर्ष 1975 में हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और वर्ष 1977 में चमोली के गोविन्द स्नातकोत्तर कॉलेज से वनस्पति विज्ञान में स्नातकोत्तर किया। उन्होंने वर्ष 1978 में बी.एड, वर्ष 1980 में इतिहास में एमए और वर्ष 1984 में राजनीति विज्ञान में एमए किया। उन्हें वर्ष 1979 में माध्यमिक शिक्षा में शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया। उन्होंने वर्ष 2009 से 2012 तक उत्तराखंड स्पेस एप्लीकेशन सेन्टर में वैज्ञानिक के रूप में भी काम किया। वे शिक्षा विभाग से वर्ष 2014 में अपने कर्तव्यों से सेवानिवृत्त हो गए। शैक्षणिक और वैज्ञानिक कार्यों के अलावा, उन्होंने पर्यावरण संरक्षण और संरक्षण की दिशा में कई सफल अभिनव प्रयोग करके भी समाज को लाभान्वित किया। इस आंदोलन के अंतर्गत कई यादगार वन स्थापित किए गए हैं और इस आंदोलन ने अब परम्परा का रूप ले लिया है। कई राज्यों और देशों ने इस पहल को स्वीकार किया है।

3. श्री रावत ने जंगल के संरक्षण और संवर्धन, वन्य जीवन के संरक्षण, हिमालय, जल संसाधनों और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए दो दर्जन से अधिक सफल अभिनव प्रयोग किए हैं। उन्होंने ''ग्राम गंगा अभियान'' भी आरंभ किया। इस पहल के शुरु होने से प्रवासी लोग अपने गांवों से जुड़ रहे हैं।

4. श्री रावत ने वर्ष 1995 में चमोली जिले के ग्वालदम शहर से मैती आंदोलन की शुरुआत की। मैती शब्द माल्ट से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''मातृ घर''। मायका छोड़ने से पहले दूल्हा–दुल्हन अपनी शादी को यादगार बनाने के लिए एक पौधा लगाते हैं। दुल्हन की मां पौधे के पोषण और संरक्षण की जिम्मेदारी लेती है।

5. श्री रावत ने 1976 में गोपेश्वर, चमोली में ''हिमालय वन्य जीवन संस्थान'' भी स्थापित किया, जिससे हिमालय की अत्यंत दुर्लभ वन्य जीव प्रजातियों का संरक्षण किया जा सके। इन्होंने विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से 5000 से अधिक वन्य जीव की प्रजातियों को शिकारियों से बचाया गया। वर्ष 1974 में उन्होंने पद्म भूषण पुरस्कार विजेता, श्री चंडी प्रसाद भट्ट जिन्हें चिपको आंदोलन के लिए जाना जाता है, के साथ भी काम किया। उन्होंने क्वार्कस और मिक्स प्रजाति के वन भी स्थापित किए हैं। शहीदों की याद में उन्होंने शौर्य वन, गौरा देवी वन और पितृ वन की स्थापना की। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण और जागरूकता से संबंधित नंदासैन पर्यटन मेला, श्रावणी विकास पर्यटन मेला नारायण बागर, राजगढ़ी पर्यटन एवं परिवर्तन मेला जैसे तीन बड़े मेलों की शुरुआत की। श्री रावत ने राजगढ़ी उत्तरकाशी, ग्वालदम चमोली आदि स्कूलों में बहुत सी छोटी नर्सरी विकसित की हैं। ग्वालदम में उन्होंने देवदार (सेडरस देवदार) के 10,000 पौधे लगाए और गौरा वन, इंद्र वन और देव वन आदि विकसित किए।

6. श्री रावत को अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से पुरस्कृत किया गया है। उन्हें गॉड फ्रे ब्रेवरी अवार्ड, सीआईआई ग्रीन अवार्ड, उत्तराखंड रत्न, गढ़ गौरव, गढ़ विभूति, पर्वत श्री, वृक्ष मित्र अवार्ड, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी द्वारा सर्वश्रेष्ठ विज्ञान शिक्षक पुरस्कार, लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड आदि से सम्मानित किया गया है।